मंगलाचरण

सिद्ध सदन सुंदर बदन, गणनायक महाराज।
दास आपका हूं सदा, कीजै जन के काज॥
जय संकर जय गंगधर, जय-जय उमा भवानि।
सियाराम कीजै कृपा, हरि-राधा कल्यानि॥
जय सारद जय लच्छमी, जय-जय गुरूदयाल।
देव, विप्र, गौ, संतजन, भारत देश बिसाल॥
चरणकमल गुरुजनन के, नमन करूं धरि सीस।
मो घर सुख-संपति भरो, देकर शुभ आसीस॥
मातु सरन हूं आपकी दो श्री और संतोस।
संत जनन के चरन हित खर्च होय मम कोस॥
मां संतोषी तोष दो, हो भटकन से दूर।
तव सेवा में मन लगे, अहंकार हो चूर॥